# पर्यावरण शिक्षा

## विषय सूची


| क्रमांक | विषय वस्तु | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 1 | ➢ संरचना<br>• इतिहास | 02–06 |
| 2 | ➢ परिचय | 06–13 |
| 3 | ➢ पर्यावरण शिक्षा उद्देश्य एवं दायरा | 13–22 |
| 4 | ➢ पर्यावरण शिक्षा के मार्गदर्शक सिद्वान्त | 22–23 |
| 5 | ➢ पर्यावरण शिक्षा के घटक | 23–24 |
| 6 | ➢ पर्यावरण शिक्षा के स्तर | 24–31 |
| 7 | ➢ पर्यावरण शिक्षा के लिए लक्षित जनसंख्या | 32–34 |
| | ➢ पर्यावरण शिक्षा की आवश्सकता एवं महत्व<br>पर्यावरण शिक्षा के लाभ | 34–38 |
| | ➢ पर्यावरण शिक्षा को लागू करने में बाधाएँ | 39–42 |
| | ➢ निष्कर्ष | 43–43 |

# पर्यावरण शिक्षा

## इतिहास

पर्यावरण शिक्षा की जड़ें 18 वीं शताब्दी जैसे प्रारंभिक समय में पायी जा सकती हैं जब जीनजैक्स रूसो- ने ऐसी शिक्षा के महत्व पर जोर दिया था जो  में पर्यावरण के महत्व पर केन्द्रित होकई दशकों बाद ., लुईस अगसिज़ जो एक स्विस में जन्मे प्रकृतिवादी थे, उन्होंने भी छात्रों को किताबों का नहीं", प्रकृति का अध्ययनकरने  " के लिए प्रेरित किया और रूसो के दर्शन का समर्थन किया। इन दोनों प्रभावशील विद्वानों ने एक सुदृढ़ पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रम की नींव डालने में सहायता की, जो प्रकृति अध्ययन के नाम से जाना जाता है, यह 20 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध व् 21 वीं शताब्दी के पूर्वार्ध के दौरान की घटना है।

प्रकृति अध्ययन के आन्दोलन में छात्रों को प्रकृति की प्रशंसा व प्राकृतिक जगत के अंगीकरण की भावना के विकास में सहायता के लिए पौराणिक कथाओं व नैतिक शिक्षा का उपयोग किया जाता था। कॉर्नेल विश्वविद्यालय में प्रकृति अध्ययन विभाग की विभागाध्यक्ष ऐना बोट्स्फोर्ड कौमस्टॉक, प्रकृति अध्ययन आन्दोलन में एक प्रसिद्द हस्ती थीं और उन्होंने 1911 में हैंडबुक फॉर नेचर स्टडी नामक किताब लिखी, जिसमे सांस्कृतिक मान्यताओं के सम्बन्ध में बच्चों को शिक्षित करने के लिए प्रकृति का उपयोग किया जाता है। कॉर्नस्टॉक और आन्दोलन के अन्य नेताओं, जैसे कि लिबर्टी हाइड बैले ने सामुदायिक नेताओं, अध्यापकों और वैज्ञानिकों द्वारा

आश्चर्यजनक समर्थन एकत्र करने में प्रकृति अध्ययन की सहायता की और पूरे संयुक्त राज्य में बच्चों का विज्ञान का पाठ्यक्रम भी परिवर्तित कर दिया.

1920 व् 1930 के दशक के दौरान ग्रेट डिप्रेशन और डस्ट बाउल के फलस्वरूप एक नए प्रकार की पर्यावरणीय शिक्षा, संरक्षण शिक्षा उद्भवित हुईकंज़र्वेशन . एजुकेशन प्रकृति अध्ययन की तुलना में एक अत्यंत भिन्न तरीके से प्राकृतिक संसार को संबोधित करती है क्यूंकि यह स्वाभाविक इतिहास के स्थान पर कठोर वैज्ञानिक प्रशिक्षण पर केन्द्रित है। संरक्षण शिक्षा एक प्रमुख प्रबंधन व योजना उपकरण था जो इस काल के दौरान सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान में सहायता करता था।

आधुनिक पर्यावरणीय शिक्षा आन्दोलन जिसने 1960 के दशक के अंतिम और 1970 के प्रारंभिक वर्षों में स्पष्ट वेग प्राप्त किया, वह प्रकृति अध्ययन और संरक्षण शिक्षा से ही निकला है। इस काल के दौरान, कई घटनाओं जैसे नागरिक अधिकार -, वियतनाम युद्ध और शीत युद्ध ने अमेरि - लोगों को एक दूसरे व यूएस सरकार के . हालाँकि .विरुद्ध कर दिया, अधिकांशतः लोग विकिरण विच्छेद से डरने लगे, रैचल कार्सन की साइलेंट स्प्रिंग में उल्लेखित रासायनिक कीटनाशक और वायु प्रदूषण व अपशिष्ट की अधिक मात्रा, अपने स्वास्थ और स्वाभाविक पर्यावरण के स्वाथ्य के प्रति लोगों की चिंता ने एक एकीकृत तथ्य का मार्ग प्रशस्त किया जिसे पर्यावरणवाद के नाम से जाना जाता है।

एक नए आन्दोलन के रूप में पर्यावरण शिक्षा के बारे में पहला लेख 1969 में फी डेल्टा कप्पन में प्रकाशित हुआ जिसके लेखक जेम्स एस्वान थ ."पर्यावरण शिक्षाकी " एक परिभाषा सबसे पहले मार्च1970 में एजुकेशन डाइजेस्ट में प्रकाशित हुई जिसे विलियम स्टाप ने लिखा था, बाद में स्टाप उनेस्को के पर्यावरणीय शिक्षा के प्रथम निदेशक बने और फिर ग्लोबल इंटरनैशनल नेटवर्क के.

अंततः, 22 अप्रैल 1970 को मनाये गए प्रथम पृथ्वी दिवस (अर्थ डेपर्यावरणीय - ने आधुनिक पर्यावरण शिक्षा के लिए - समस्याओं के विषय में एल राष्ट्रीय शिक्षा मार्ग प्रशस्त किया। उसी वर्ष बाद में, राष्ट्रपति निक्सन ने पर्यावरणीय शिक्षा अधिनियम को स्वीकृति दे दी, जिसका उद्देश्य K-12 विद्यालयों में पर्यावरणीय शिक्षा को सम्मिलित करना था। इसके बाद, 1971 में, द नैशनल एसोशियेशन फॉर एंवयार्मेंटल एजुकेशन जिसे नॉर्थ अमेरिकन एसोशियेशन फॉर एंवयार्मेंटल ) का निर्माण हुआ जिससे पर्यावरण शिक्षा (एजुकेशन के नाम से जाना जाता है राने कार्यक्रम को प्रोत्साहित किया जा सके और अध्यापकों को संसाधन उपलब्ध क के द्वारा पर्यावरण साक्षरता में सुधार किया जा सके.

अंतर्राष्ट्रीय रूप से, पर्यावरण शिक्षा को मान्यता तब मिली जब 1972 में स्टॉकहोम, स्वीडेन में मानव पर्यावरण पर आयोजित यू ऍन कॉन्फ्रेंस ने पर्यावरणीय शिक्षा को वैश्विक पर्यावरणीय समस्याओं से निपटने के लिए एक आवश्यक उपकरण घोषित कर दियाएजुकेशन साइंटिफिक एंड कल्चरल ऑर्गेनाइज़ेश द युनाइटेड नेशंस .) और

युनाइटेड नेशंस एन्वायरमेंट प्रोग्रैम ) ने तीन प्रमुख घोषणायें की जिन्होंने पर्यावरणीय शिक्षा के प्रवाह का मार्ग निर्देशन किया।

## स्टॉकहोम घोषणा

05-16 जून 1972 - मानव पर्यावरण पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन की घोषणायह . दस्तावेज़7 घोषणाओं व 26 सिद्धांतों द्वारा बना था जो संसार के लोगों को मानव " .लिए प्रेरित और निर्देशित कर सके पर्यावरण के संरक्षण और बेहतरी के

## बेलग्रेड चार्टर

13-22 अक्टूबर 1975 - बेलग्रेड चार्टर पर्यावरण शिक्षा पर अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला का परिणाम था जो बेलग्रेड, यूगोस्लाविया में आयोजित की गयी थी। बेलग्रेड चार्टर स्टॉकहोम घोषणा पर बनाया गया था और पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रम के लक्ष्यों, उद्देश्यों और मार्गदर्शक सिद्धातों को जोड़ता है। यह पर्यावरण शिक्षा के लिए श्रोताओं को परिभाषित करता है, जिसमे आम जनता भी शामिल है।

## टाबिलिसि घोषणा

14-26 अक्टूबर 1977 - टाबिलिसि घोषणा में के पर्यावरण के सुधार व संसार" संरक्षण में और साथ ही साथ संसार के समुदायों के सुदृढ़ व संतुलित विकास में पर्यावरणीय शिक्षा की महत्त्वपूर्ण भूमिका को सर्वसम्मति से स्वीकार किया गया है।टाबिलिसि घोषणा ने स्टॉकहोम घोषणा और बेलग्रेड चार्टर में अद्यतन सुधार " और नए लक्ष्यों, उद्देश्यों, विशेषताओं और पर्यावरण शिक्षा के मार्गदर्शक सिद्धांतों के योग द्वारा उन्हें स्पष्ट कर दिया.

उस दशक के बाद, 1977 में, टाबिलिसि में पर्यावरण शिक्षा पर हुए अंतर सरकारी सम्मेलन में, जॉर्जिया ने वैश्विक पर्यावरण के संरक्षण व बेहतरी में पर्यावरण शिक्षा की भूमिका पर बल दिया और पर्यावरण शिक्षा के लिए ढ़ांचे व दिशा निर्देश प्रदान करने की मांग की .सम्मेलन ने पर्यावरण शिक्षा की भूमिका, लक्ष्य और लक्षणों को प्रस्तुत किया और इसके लिए अनेकों लक्ष्यों और सिद्धांतों को उपलब्ध कराया.

## संयुक्त राज्य अमेरिका में आधुनिक पर्यावरण शिक्षा

1970 के दशक के बाद, गैर सरकारी संगठन जोकि पर्यावरणीय शिक्षा पर केन्द्रित थे, उनका निरंतर विकास व गठन होता गया, उनकी कक्षाओं में पर्यावरणीय शिक्षा देने वाले शिक्षकों की संख्या बढ़ गयी और इस आन्दोलन को दृढ़ राजनैतिक समर्थन मिल गया। जब युनाइटेड स्टेट कांग्रेस ने राष्ट्रीय पर्यावरणीय शिक्षा अधिनियम 1990 को स्वीकृति दे दी तब यह आगे बढ़ने की दिशा में एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण कदम था, इसके फलस्वरूप पर्यावरणीय शिक्षा का कार्यालय यूएंवयार्मेंटल .एस. र ईपीए को संघीय स्तर पर पर्यावरणीय प्रोटेक्शन एजेंसी में बना दिया गया औ शिक्षा सम्बन्धी पहल करने की अनमति मिल गयी।

## संयुक्त राज्य अमेरिका में पूर्ववृत्त

संयुक्त राज्य में पर्यावरण शिक्षा के कुछ पूर्ववृत्त प्रकृति अध्ययन, संरक्षण शिक्षा और विद्यालयीय शिविर थे। प्रकृति अध्ययन बाह्य अन्वेषण रोथ), 1978) के साथ शैक्षिक दृष्टिकोण को एकीकृत करता था। संरक्षण शिक्षा ने प्राकृतिक संसाधनों के दुरुपयोग के प्रति जागरूकता विकसित कीजॉर्ज पर्किन्स मार्श ने मानवता के .

एस फॉरेस्ट सर्विस .यू .अभिन्न अंग के रूप में स्वाभाविक संसार पर भाषण दिया और ईपीए जैसी सरकारी एजेंसियां भी संरक्षण कार्यावली पर जोर दे रही थीं। संरक्षण आदर्शों अभी भी पर्यावरण शिक्षा को निर्देशित करते हैं। विद्यालयीय शिविर पर्यावरण और शैक्षिक उद्देश्यों हेतु कक्षा से बाहर संसाधनों के प्रयोग के संपर्क में लाते थे। इन पूर्व्वृत्तों की विरासत अभी भी पर्यावरण शिक्षा के विकासरत क्षेत्र में विद्यमान है।

## परिचय

पर्यावरण शिक्षा को अधिकांश पारंपरिक K -12 पाठ्यक्रम में एक अतिरिक्त यां वैकल्पिक विषय माना जाता है। प्रारंभिक विद्यालय के स्तर पर पर्यावरण शिक्षा विज्ञान संवर्धन पाठ्यक्रम, प्राकृतिक ऐतिहासिक स्थलों का भ्रमण, सामुदायिक सेवा शिविर और बाह्य विज्ञान विद्यालयों के रूप ले सकती है। ईई की नियमावली, विद्यालय और संगठनों को उन पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रम के सुधार और विकास में मदद करती है जो नागरिकों को पर्यावरण के सम्बन्ध में गहन जानकारी प्रदान करते हैं। विद्यालय सम्बन्धी नियमावली तीन मुख्य घटकों पर केन्द्रित होती हैपाठ्यक्रम :, ग्रीन सुविधाएँ और प्रशिक्षण.

विद्यालय नियमावली के पर्याप्त सहायता कोष द्वारा पर्यावरण शिक्षा को अपने पाठ्यक्रम में एकीकृत कर सकते हैं। अधिगम का यह माध्यमपर्यावरण को " जो - पर्यावरण शिक्षा को - प्रयोग करने के लिए जाना जाता है "एकीकरण के सन्दर्भ में त करता है और इस प्रकार पर्यावरण शिक्षा अन्य प्रमुख मूलभूत विषयों में सम्मिलि

विषयों के अध्ययन के समय में व्यवधाननहीं डालती, जैसे कि कला, व्यायाम यां संगीत. कक्षा मे पर्यावरण शिक्षा के पाठ्यक्रम के लिए आर्थिक सहायता के अतिरिक्त, पर्यावरण शिक्षा की नियमावली व्यवहारिक बाह्य अधिगम के लिए आर्थिक संसाधन भी आवंटित करती है। यह गतिविधियाँ और शिक्षा स्वाभाविक " "न्यून विकार, का सामना करने और उसे कम करने में सहायता करती हैं और साथ ही साथ और अधिक स्वस्थ जीवन शैली को प्रोत्साहित करती हैं।

हरित विद्यालय या हरित सुविधा का प्रचार, पर्यावरण शिक्षा के अन्य मुख्य घटक हैं। विद्यालयों के हरितकरण की सुविधा की औसत लागत, एक पारंपरिक विद्यालय के निर्माण की लागत और लागत के 2 प्रतिशत के योग से कुछ ही कम होती है, लेकिन इन ऊर्जा दक्ष ईमारतों से मिलने वाला प्रतिफल कुछ ही वर्षों में प्राप्त होने लगता है। पर्यावरण शिक्षा नीतियाँ विद्यालय के हरितकरण में आने वाली प्रारंभिक लागत की अपेक्षाकृत छोटी समस्याओं को कम करने में सहायता करती हैं। हरित विद्यालय नीतियाँ आधुनीकीकरण, नवीनीकरण या विद्यालय की प्राचीन सुविधाओं की मरम्मत के लिए अनुदान भी प्रदान करती हैं। इसके अतिरिक्त, स्वास्थ की दृष्टि से अच्छे भोजन का विकल्प भी हरित विद्यालयों का प्रमुख पहलू होता है। नीतियाँ विशेषकर ताज़ा बनाया खाना खिलाने पर विशेष ध्यान देती हैं, जोकि विद्यालय के अन्दर स्थानीय रूप से उगायी गयी उच्च गुणवत्ता युक्त सामग्रियों से बना हो.

माध्यमिक विद्यालयों में, पर्यावरण पाठ्यक्रम विज्ञान के अंतर्गत ही या विद्यार्थियों के रूचि समूह या क्लबों के आधार पर एक केन्द्रित विषय हो सकता है। स्नातक या

स्नातकोत्तर स्तर पर, इसे शिक्षाशास्त्र, पर्यावरण शिक्षा, पर्यावरण विज्ञान और नीतियाँ, पारिस्थितिक विज्ञान, या मानवसांस्कृतिक पारिस्थितिकी के अंतर्गत / अपने ही एक क्षेत्र के रूप में देखा जा सकता है।

पर्यावरण शिक्षा कक्षा की पाठयोजना तक ही प्रतिबंधित नहीं है। अनेकों ऐसे तरीके - रे महैं जिनके द्वारा बच्चों को उस वातावरण के बा शिक्षा दी जा सकती है जिसमे वह रह रहे हैं। विद्यालय के आँगन में अनुभव पर आधारित शिक्षा व राष्ट्रीय उद्यानों के प्रत्यक्ष भ्रमण से लेकर विद्यालय के बाद हरित क्लबों और विद्यालय स्तर की चिरस्थायी परियोजनाओं तक, पर्यावरण एक ऐसा विषय है जो सुलभतापूर्वक और तत्परता से गमनीय है। इसके आलावा, पृथ्वी दिवस को मनाया जाना या ईई )EE) सप्ताह में भाग लेना  जो नैशनल)एन्वायरमेंट एजुकेशन प्रोग्रैम द्वारा चलाया जाता है(, पर्यावरण शिक्षा के प्रति अपनी शिक्षा को समर्पित करने का एक बहुत ही अच्छा तरीका है। सर्वाधिक असरदार होने के लिए, एक समग्र माध्यम का प्रोत्साहन करना होगा जिसमे उदाहरणों की मुख्य भूमिका हो, जिसके अंतर्गत कक्षा और विद्यालय के मैदान में दीर्घकालिक अभ्यासों का आयोजन होगा और अभिभावकों और विद्यार्थियों को पर्यावरण शिक्षा को अपने घर तक ले जाने के लिए प्रोत्साहित किया जायेगा.

पर्यावरण नीति का अंतिम पहलू यह है कि एक चिरस्थायी समाज में विकास के लिए लोगों को प्रशिक्षित किया जाये, हालाँकि यह दृष्टिकोण अंत में आता है किन्तु यह महत्व में किसी से कम नहीं है,. प्रकृति के साथ एक मजबूत सम्बन्ध स्थापित

करने के अतिरिक्त, अमेरिकी नागरिकों को 21वीं शताब्दी के जनबल में सफल होने के लिए इसकी जानकारी आवश्यक है और उन्हें इसमें कुशल भी होना चाहिएइस . प्रकार पर्यावरण शिक्षा नीतियाँ अध्यापक प्रशिक्षण व श्रमिक प्रशिक्षण पहल, दोनों के लिए ही आर्थिक सहायता देती हैं। प्रभावशाली ढंग से पढ़ाने व पर्यावरण शिक्षा को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने के लिए अध्यापकों को अवश्य ही प्रशिक्षित होना होगादू .सरी ओर, वर्तमान जनबल को अवश्य ही प्रशिक्षित या पुनः प्रशिक्षित करना होगा जिससे वह नयी हरित अर्थव्यवस्था के साथ अनुकूलन स्थापित कर सकेंपर्यावरण शिक्षा नीतियाँ जो प्रशिक्षण कार्यक्रमों को आर्थिक सहायता देती हैं . वह नागरिकों को एक चिरस्थायी समाज में समृद्ध हने हेतु शिक्षित करने के विषय पर अत्यंत विवेचनात्मक हैं।

सतत विकास और पर्यावरण संरक्षण नीतियों, उद्देश्यों और लक्ष्यों की खोज के लिए जनता को पर्यावरण और विकास के कई आयामों के बारे में पर्याप्त रूप से संवेदनशील बनाने की आवश्यकता है। पर्यावरणीय मुद्दों के बारे में जागरूकता और समझ पर्यावरण की दृष्टि से सुदृढ़ और सतत विकास के प्रति प्रतिबद्धता और सार्थक कार्रवाई के लिए आधार और तर्क प्रदान करती है। ऐसी नीतियों और कार्यक्रमों को लागू करने के लिए कई रणनीतियों को अपनाने के लिए शिक्षा को एक महत्वपूर्ण शक्ति के रूप में पहचाना गया है।

पर्यावरण शिक्षा को पर्यावरणीय मुद्दों के बारे में जागरूकता और समझ पैदा करने की एक प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो जिम्मेदार व्यक्तिगत और समूह कार्यों की ओर ले जाती है। सफल पर्यावरण शिक्षा उन प्रक्रियाओं पर ध्यान केंद्रित करती है जो महत्वपूर्ण सोच, समस्या समाधान और प्रभावी निर्णय लेने के कौशल को बढ़ावा देती हैं। पर्यावरण शिक्षा उन प्रक्रियाओं का उपयोग करती है जिनमें छात्रों को अवलोकन, माप, वर्गीकरण, प्रयोग और अन्य डेटा एकत्रण तकनीकों में शामिल किया जाता है। ये प्रक्रियाएँ छात्रों को पर्यावरणीय मुद्दों के बारे में चर्चा करने, अनुमान लगाने, भविष्यवाणी करने और डेटा की व्याख्या करने में सहायता करती हैं ।

## परिभाषाएँ:

"पर्यावरण शिक्षा एक सीखने की प्रक्रिया है जो पर्यावरण और संबंधित चुनौतियों के बारे में लोगों के ज्ञान और जागरूकता को बढ़ाती है, चुनौतियों का समाधान करने के लिए आवश्यक कौशल और विशेषज्ञता विकसित करती है, और सूचित निर्णय लेने और जिम्मेदार कार्रवाई करने के लिए दृष्टिकोण, प्रेरणा और प्रतिबद्धताओं को बढ़ावा देती है"। (त्बिलिसी घोषणा, 1978)।

यूनेस्को के अनुसार, “पर्यावरण शिक्षा पर्यावरण संरक्षण के लक्ष्यों को लागू करने का एक तरीका है। यह विज्ञान की कोई अलग शाखा नहीं है बल्कि आजीवन अध्ययन का अंतःविषय क्षेत्र है।” इसका अर्थ है पर्यावरण की सुरक्षा और संवर्द्धन के

लिए शिक्षा और मानव समुदायों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए विकास के साधन के रूप में शिक्षा।

पर्यावरण शिक्षा (ईई) यह सिखाने के लिए संगठित प्रयासों को संदर्भित करती है कि प्राकृतिक वातावरण कैसे कार्य करता है, और विशेष रूप से, मनुष्य कैसे स्थायी रूप से रहने के लिए व्यवहार और पारिस्थितिकी तंत्र का प्रबंधन कर सकता है। यह एक बहु-विषयक क्षेत्र है जो जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान, भौतिकी, पारिस्थितिकी, पृथ्वी विज्ञान, वायुमंडलीय विज्ञान, गणित और भूगोल जैसे विषयों को एकीकृत करता है।

यह शब्द अक्सर स्कूल प्रणाली के भीतर प्राथमिक से लेकर उत्तर-माध्यमिक तक की शिक्षा को दर्शाता है।

हालाँकि, इसमें कभी-कभी जनता और अन्य दर्शकों को शिक्षित करने के सभी प्रयास शामिल होते हैं, जिनमें प्रिंट सामग्री, वेबसाइट, मीडिया अभियान आदि शामिल हैं। पर्यावरण शिक्षा (ईई) एक ऐसे समाज में परिवर्तन के लिए व्यक्तियों और समुदायों की शिक्षा है जो इसके बारे में जानकार है। पर्यावरण और उससे जुड़ी समस्याओं के बारे में जागरूक किया और उनके समाधान के लिए प्रेरित किया। संक्षेप में, पर्यावरण शिक्षा प्रदान की जाती है ताकि लोग अपने आसपास की दुनिया को बेहतर समझ सकें और जान सकें कि इसकी उचित देखभाल कैसे की जाए ताकि दुनिया एक बेहतर जगह बन सके।

संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) का कहना है कि ईई समाज के बीच प्रकृति के प्रति अंतर्निहित सम्मान प्रदान करने और सार्वजनिक पर्यावरण जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण है। यूनेस्को पर्यावरण की सुरक्षा, गरीबी उन्मूलन, असमानताओं को कम करने और सतत विकास के बीमा (यूनेस्को, 2014ए) के माध्यम से जीवन की सामाजिक गुणवत्ता (क्यूओएल) के भविष्य के वैश्विक विकास की सुरक्षा में ईई की भूमिका पर जोर देता है। पर्यावरण शिक्षा इस अर्थ में एक दो-तरफा प्रणाली है कि शिक्षक लोगों को अपने निष्कर्ष उपलब्ध करा रहा है, साथ ही संदेश की प्रभावशीलता की निगरानी शिक्षक द्वारा की जाती है और संबंधित अधिकारियों को बताई जाती है। विस्तार व्यक्ति या शिक्षक की ज़िम्मेदारी बहुत बड़ी है क्योंकि उसे लगभग सभी क्षेत्रों में विशेषज्ञ होना पड़ता है क्योंकि उसे पर्यावरण के विभिन्न पहलुओं पर व्याख्या करना और प्रश्नों का उत्तर देना होता है। पर्यावरण शिक्षा की सामग्री और सामग्री की भी समीक्षा और परिवर्तन हो रहा है। पर्यावरण शिक्षा वैचारिक ढांचे के भीतर विकसित हुई है जो त्बिलिसी (1977) में पहले अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन से उभरी है और अब इसे स्थिरता के लिए शिक्षा के रूप में देखा जाता है। इसने पर्यावरण शिक्षा को *एजेंडा 21 और अन्य* में शामिल मुद्दों और चिंताओं की विस्तृत श्रृंखला को संबोधित करने की अनुमति दी, जो सतत विकास आयोग (यूनेस्को 1997) की बैठकों के माध्यम से विकसित हुए।

ईई एक जटिल प्रक्रिया है, जो न केवल घटनाओं को कवर करती है, बल्कि समग्र रूप से समाज निर्माण के लिए एक मजबूत अंतर्निहित दृष्टिकोण को भी कवर करती है। ईई लोगों को साझेदारी बनाने, एनजीओ गतिविधियों को समझने, शहरी नियोजन के लिए भागीदारी दृष्टिकोण विकसित करने और पर्यावरण-व्यवसाय के लिए भविष्य के बाजार सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक जागरूकता प्रदान करता है।

## पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्य

पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्य प्रकृति की दृष्टि से व्यापक हैं। पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से मानव जाति के विकास एवं प्रगति के लिए प्राकृतिक संसाधनों की देखभाल एवं उपयोग के बारे में व्यवस्थित ज्ञान दिया जाना चाहिए। पर्यावरण शिक्षा का प्राथमिक उद्देश्य मानव जाति के अस्तित्व के लिए प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण और उपयोग के लिए आवश्यक सिद्धांतों के बारे में ज्ञान प्रदान करना है। पर्यावरण शिक्षा ऐसे महत्वपूर्ण विचारों के मूल्य को समझने के लिए आवश्यक ज्ञान और अनुभव प्रदान करती है। मनुष्य और प्रकृति के बीच मैत्रीपूर्ण और संतुलित संबंध बनाए रखने की आवश्यकता को साकार करने में पर्यावरण शिक्षा की भूमिका महत्वपूर्ण है।

## पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्य

पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्यों को– संज्ञानात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक इन तीन क्षेत्रों में विभक्त किया जा सकता है–

संज्ञानात्पक उद्देश्य–

(1) तत्कालीन पर्यावरण का ज्ञान प्राप्त करने में सहायता देना।

(2) दूर स्थित वातावरण का ज्ञान प्राप्त करने में सहायता देना।

(3) जैविक तथा अजैविक पर्यावरण को समझने में सहायता करना ।

(4) पोषण विषयक विभिन्न स्तरों पर जीवन की अन्योन्याश्रित स्थिति को सुलझाने में सहायता देना ।

(5) भावी विश्व में अनियंत्रित जनसंख्या वृद्धि या संसाधनों के अनियंत्रित विदोहन के प्रभावों को समझने में सहायता देना ।

(6) जनसंख्या वृद्धि की प्रवृत्तियों की जाँच करना तथा देश के सामाजिक आर्थिक विकास के लिए व्याख्या करना।

(7) भौतिक तथा मानवीय संसाधनों के विदोहन का मूल्यांकन करना तथा उपचारात्मक उपायों का सुझाव देना।

(8) सामाजिक तनावों के कारणों की खोज में सहायता देना तथा उनको दूर करने के लिए उपाय बताना।

**भावात्मक उद्देश्य–**

(1) समीपस्थ या दूरस्थ पर्यावरण के वानस्पतिक तत्त्वों तथा जीव जतुओं में रुचि रखने में सहायता देना।

(2) समुदाय तथा समाज को समस्याओं में रुचि रखने के लिए तत्पर बनाना ।

(3) विभिन्न जातियो, प्रजातियों, धर्मों तथा संस्कृति के प्रति सहिष्णुता प्रदर्शित करना ।

(4) प्रकृति को देनों को प्रशंसा करना ।

(5) समानता, स्वतत्रता, भातृत्व, सत्य और न्याय को महत्त्व देना ।

(6) सभी देशों को राष्ट्रीय सीमाओं को आदान– प्रदान करना ।

(7) अपने पर्यावरण की स्वच्छता तथा शुद्धता को महत्व देना।

**क्रियात्मक उद्देश्य–**

(1) उन कार्यक्रमों में सक्रिय भाग लेना जिन से वायु, जल तथा ध्वनि प्रदूषण को कम किया जा सके।

(2) आस– पडौस की सफाई के कार्यक्रम में सक्रियता से भाग लेना ।

(3) नगरीय तथा ग्रामीण स्वच्छता योजना में भाग लेना।

(4) खाद्य पदार्थों को मिलावट दूर करने वाले कार्यक्रमों में भाग लेना।

बेलग्रेड कार्य गोष्ठी में संयुक्त राष्ट्र 1975 में पर्यावरणीय शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित करने की संस्तुति को गई–

**(1) जागरुकता–** व्यक्तियों तथा समूहों में समग्र पर्यावरण तथा उसकी समस्याओं के

प्रति संवेदनशीलता तथा जागरुकता विकसित करने में सहायता प्रदान करना ।

**(2) ज्ञान–** व्यक्तियों तथा सामाजिक समूहों में संपूर्ण पर्यावरण तथा उसकी समस्याओं के बारे में समझ विकसित करने में सहायता प्रदान करना।

**(3) अभिवत्ति–** व्यक्तियों तथा सामाजिक समूहों में सामाजिक मूल्यों, वातावरण के प्रति घनिष्ठ प्रेम भावना तथा उसके संरक्षण एवं सुधार के लिए प्रेरणा विकसित करने में सहायता प्रदान करना।

**(4) कौशल–** पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान के लिए व्यक्तियों और सामाजिक समूहों में कौशलों का विकास करना।

**(5) मूल्यांकन योग्यता–** व्यक्तियों और सामाजिक समूहों में पर्यावरणीय तत्त्वों तथा शैक्षिक कार्यक्रमों को पारिस्थितिकीय,राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, सौंदर्यात्मक तथा शैक्षिक कारकों के संदर्भ में मूल्यांकन करने की योग्यता के विकास में सहायता देना।

**(6) सहभागिता–** व्यक्तियों और सामाजिक समूहों को पर्यावरणीय समस्याओं के उपयुक्त समाधान के संबंध में उत्तरदायित्व की भावना तथा उपयुक्त कदम उठाने के लिए तत्पर बनाने में सहायता प्रदान करना।

यूनेस्को )UNESCO) के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन तिवल्सी )1977) में पर्यावरण शिक्षा के ये उद्देश्य निर्धारित किये गए–

(1) पर्यावरण जागरुकता का विकास करना।

(2) पर्यावरणीय समस्याओं के प्रति संवेदनशीलता विकसित करना।

(3) पर्यावरणीय घटकों के सम्बन्ध में ज्ञान व आपसी निर्भरता का बोध करना।

(4) पर्यावरणीय समस्याओं के स्वरूप व प्रक्रियाओं का बोध कराना।

(5) पर्यावरणीय समस्याओं के समाधान के लिए अपेक्षित कौशल व कार्य क्षमताओं का विकास करना।

(6) पर्यावरणीय संरक्षण व सुधार के लिए उसकी समस्याओं के समाधान में सक्रिय भाग लेने के लिए प्रेरित करना।

(7) छात्रों को व्यावहारिक कार्यों हेतु अक्सर प्रदान करना ।

(8) पर्यावरण से संबंधित भावनाओं, अभिवृत्तियों व मूल्यों का विकास करना।

(9) सभी स्तरों पर भागीदारी को बढ़ावा देना जिससे समस्याओं का समाधान हो सके।

(10) शिक्षा योग्यताओं एवं कार्यक्रमों के मूल्यांकन की योग्यता विकसित करना।

(11) परिस्थिति विज्ञान, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और सौंदर्यात्मकता के कारकों की प्रभावशीलता का आकलन करना।

इन सभी उद्देश्यों को हर स्तर व औपचारिक एव अनौपचारिक शिक्षा से सबंधित है और इनमें आपस में गहन संबंध है।।

**प्राथमिक स्तर पर पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्य–**

(1) पर्यावरण के विभिन्न तथ्यों से छात्रों को अवगत कराना,

(2) पर्यावरण संचेतना का विकास करना,

(3) छात्रों को वास्तविक अनुभव व ज्ञान प्रदान करना,

(4) पर्यावरण से संबंधित छात्रों की विभिन्न जिज्ञासाओं को संतुष्ट करना,

(5) बच्चों के आसपास के वातावरण और उसमें होने वाले विभिन्न घटनाओं की जानकारी उपलब्ध कराना,

(6) पर्यावरण में उपस्थित विभिन्न जीव– जंतुओं और पेड़– पौधों के प्रति प्रेम, दया, सहानुभूति और सम्मान की भावना विकसित करना,

(7) पर्यावरण के प्रति रुचि का विकास करना

(8) पर्यावरण के प्रति जागरूक बनाना |

**माध्यमिक स्तर पर पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्य–**

(1) प्राथमिक स्तर पर प्राप्त ज्ञान को सुव्यवस्थित और संगठित करना,

(2) किशोरों में पर्यावरण के प्रति रुचि और जिज्ञासा उत्पन्न करना,

(3) छात्रों में उत्तम नागरिकता का विकास करना,

(4) छात्रों को पर्यावरण प्रदूषण की समस्या से परिचित कराना तथा इससे उत्पन्न खतरों के प्रति सचेत करना,

(5) पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से बालकों में सामाजिक भावनाएं उत्पन्न करना,

(6) छात्रों को भूप्रदूषण के विविध रूपों तथा उनसे उत्पन्न बीमारियों आदि से परिचित कराना,

(9) ध्वनि प्रदूषण व उसके दुष्परिणामों को ज्ञान कराना,

(10) जनसंख्या वृद्धि को रोकना,

(11) वन्य जीवों के संरक्षण से छात्रों को अवगत कराना,

(12) पर्यावरण के विभिन्न स्वरूपों का छात्रों को ज्ञान कराना,

(12) छात्रों में जनतांत्रिक कुशलता का विकास करना,

(14) सामाजिक मूल्यों व सामाजिक लक्ष्यों की प्राप्ति पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से कैसे संभव है इसे बताना,

(15) पर्यावरणीय घटनाओं व उनके कारणों को अवगत कराना,

(16) पर्यावरण व जीवन में संबंध स्थापित करना सिखाना,

(17) राष्ट्रीय धरोहरों के प्रति निष्ठा उत्पन्न करना,

(18) विश्व बंधुत्व व अन्तर्राष्ट्रीय भावनाएं विकसित करना,

(19) छात्रों में क्रियात्मक पक्षों का विकास करना,

(20) छात्रों में तार्किक ज्ञान विकसित करना।

**उच्चतर माध्यमिक स्तर पर पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्य–**

(1) पर्यावरण की समस्याओं के हल से परिचित कराना,

(2) पर्यावरणीय तथ्यों एवं सिद्धान्तों का ज्ञान छात्रों को देना,

(3) पर्यावरण व मानव के संबंध व अंतक्रिया से परिचित कराना,

(4) पर्यावरणीय दुर्घटनाओं के कारणों से अवगत कराना,

(5) पर्यावरण के लिए भावनाओं, अभिवृत्तियों तथा मूल्यों का विकास करना,

(6) पर्यावरण संरक्षण में भागीदार बनाना,

(7) पर्यावरण से संबंधित राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं और उनके समाधान की क्षमता विकसित करना,

(8) पर्यावरण के प्रति प्रेम, सम्मान जागृत करना।

## पर्यावरण शिक्षा का दायरा

पर्यावरण शिक्षा और जागरूकता या पर्यावरण विस्तार सेवाओं का दायरा पर्यावरण विज्ञान के सभी क्षेत्रों को कवर करता है। इसमें पर्यावरण पर मनुष्य के प्रभाव शामिल हैं - कैसे उसने इसका शोषण और विनाश किया है, इसे प्रदूषित किया है, लेकिन इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि मनुष्य खुद को उन समस्याओं से कैसे बचा सकता है जो उसने पर्यावरण द्वारा प्रदान किए गए संसाधनों के दुरुपयोग, दुरुपयोग और अत्यधिक उपयोग के माध्यम से पैदा की हैं। प्रकृति। पर्यावरण शिक्षा को न केवल पर्यावरणीय क्षरण के प्रभावों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए, बल्कि मौलिक कारणों की समझ पर भी ध्यान देना चाहिए। इनमें पर्यावरणीय गिरावट को बढ़ाने वाले सामाजिक और आर्थिक कारकों की जांच भी शामिल होनी चाहिए।

**पर्यावरण शिक्षा के दायरे को इस प्रकार वर्णित किया जा सकता है:**

पर्यावरण से शिक्षा

पर्यावरण के बारे में शिक्षा और

पर्यावरण के लिए शिक्षा.

पर्यावरण से प्राप्त शिक्षा में हमारे परिवेश से प्राप्त अनुभव शामिल होते हैं। इसमें पर्यावरण के सौंदर्य मूल्य और उन्हें वैसे ही बनाए रखने की आवश्यकता शामिल है। पर्यावरण के बारे में शिक्षा में हमारे पर्यावरण का अध्ययन उसकी संरचना और कार्य तंत्र और उसकी उपयोगिता के बारे में जानने के लिए शामिल है। यह पर्यावरण शिक्षा का एक महत्वपूर्ण घटक है क्योंकि पर्यावरण बनाने से पहले हमें पर्यावरण के बारे में सीखना होगा। पर्यावरण के लिए शिक्षा हमें यह सीखने में सक्षम बनाती है कि पर्यावरण को कैसे संरक्षित किया जाए ताकि हम वर्तमान पीढ़ी के साथ-साथ भविष्य के लिए भी अधिकतम लाभ प्राप्त कर सकें। यह पर्यावरण शिक्षा का संरक्षण पहलू है।

**पर्यावरण शिक्षा के मार्गदर्शक सिद्धांत**

मैं। पर्यावरण पर उसकी समग्रता, प्राकृतिक और निर्मित तकनीकी और सामाजिक संरचनाओं पर विचार करें

द्वितीय. पर्यावरण शिक्षा एक सतत जीवन रक्षक प्रक्रिया होनी चाहिए।

iii. पर्यावरण शिक्षा अपने दृष्टिकोण में अंतःविषय होनी चाहिए।

iv. स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण से प्रमुख पर्यावरणीय मुद्दों की जाँच करें।

v. वर्तमान और संभावित पर्यावरणीय स्थितियों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए पर्यावरण शिक्षा।

vi. पर्यावरणीय समस्याओं की रोकथाम और समाधान में स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के मूल्यों और आवश्यकता को बढ़ावा देना।

सातवीं. विकास और वृद्धि की योजना के पर्यावरणीय पहलुओं पर स्पष्ट रूप से विचार करें।

viii. अपने परिवेश के संबंध में निर्णय लेने में शिक्षार्थियों की स्थिति को सुधारें और जिम्मेदारी स्वीकार करें।

नौ. शिक्षार्थियों को पर्यावरणीय समस्याओं के लक्षणों और वास्तविक और संभावित कारणों की खोज करने में सक्षम बनाना।

एक्स। आलोचनात्मक सोच और समस्या समाधान कौशल विकसित करने की शिक्षार्थी की क्षमता को बढ़ाएं।

xi. प्रत्यक्ष जानकारी पर जोर देते हुए पर्यावरण के स्वरूप और उसके बारे में सीखने/सिखाने के लिए अलग-अलग शिक्षण वातावरण और दृष्टिकोण का उपयोग करें

## पर्यावरण शिक्षा के 5 घटक

पर्यावरण शिक्षा का उद्देश्य स्पष्ट रूप से आधुनिक दुनिया की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और पारिस्थितिक परस्पर निर्भरता को दर्शाना है, जिसमें विभिन्न देशों के निर्णयों और कार्यों के अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव हो सकते हैं। इस संबंध में, पर्यावरण शिक्षा को एक नई अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था की नींव के रूप में देशों और क्षेत्रों के बीच जिम्मेदारी और एकजुटता की भावना विकसित करने में मदद करनी चाहिए जो पर्यावरण के संरक्षण और सुधार की गारंटी देगी। जमीनी स्तर पर पर्यावरण शिक्षा

का मुख्य उद्देश्य व्यक्तियों और समुदायों को प्राकृतिक और निर्मित वातावरण की जटिल प्रकृति को समझाने में सफल होना है। इसके अलावा, सामाजिक समस्याओं का पूर्वानुमान लगाने और उन्हें सुलझाने तथा पर्यावरण की गुणवत्ता के प्रबंधन में जिम्मेदार और प्रभावी तरीके से भाग लेने के लिए ज्ञान, मूल्य, दृष्टिकोण और व्यावहारिक कौशल प्राप्त करना। इसलिए, पर्यावरण शिक्षा के लिए आवश्यक घटक हैं:

## पर्यावरण शिक्षा के स्तर

समग्र रूप से शिक्षा को स्थिरता की ओर पुनः उन्मुख करने में समाज के सभी स्तरों पर औपचारिक, गैर-औपचारिक और अनौपचारिक शिक्षा के विभिन्न स्तर शामिल हैं।

### ए. औपचारिक पर्यावरण शिक्षा

पर्यावरण शिक्षा दुनिया में प्राथमिक, माध्यमिक और तृतीयक शिक्षा का एक प्रमुख हिस्सा बनती जा रही है। औपचारिक शिक्षा क्षेत्र युवा पीढ़ी को पर्यावरण और विकास पर जानकारी, मुद्दों, विश्लेषणों और व्याख्याओं से अवगत कराकर पर्यावरण शिक्षा और जागरूकता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। स्कूलों से वयस्क और सामुदायिक पर्यावरण शिक्षा की ओर भी एक बड़ा बदलाव आया है। (फ़िएन 1999बी)।

एक नया विषय स्थापित करने के बजाय, अधिकांश देशों ने पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्यों और रणनीतियों को मौजूदा पाठ्यक्रम में शामिल करने का विकल्प चुना है, जबकि कुछ अन्य देश दोनों विकल्पों का अभ्यास करते हैं। इसके अलावा, पर्यावरण शिक्षा में वास्तविक दुनिया में व्यावहारिक शिक्षा पर ध्यान देने से स्कूलों को मूल्यों और कौशल विकास से संबंधित महत्वपूर्ण सामान्य शैक्षिक उद्देश्यों को संबोधित करने में मदद मिलती है (यूनेस्को-प्रॉप 1996)।

## प्राथमिक और माध्यमिक स्तर

प्राथमिक स्तर पर बच्चे को पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनाने का प्रयास किया जाता है। जोर अधिकतर जागरूकता (75%) के निर्माण पर होना चाहिए, इसके बाद वास्तविक जीवन की स्थिति (20%) और संरक्षण (5%) पर होना चाहिए। शिक्षण रणनीति में ऑडियो-विज़ुअल और फ़ील्ड दौरे शामिल हैं। माध्यमिक स्तर पर उद्देश्य वास्तविक जीवन का अनुभव, जागरूकता और समस्या की पहचान होना चाहिए। सामग्री सामान्य विज्ञान के साथ पूरक है। टीचिंग, प्रैक्टिकल और फील्ड विजिट करना है। संरक्षण, ज्ञान को आत्मसात करने, समस्या की पहचान और कार्य कौशल पर जोर दिया जाना चाहिए। सामग्री विज्ञान-आधारित और क्रिया-उन्मुख कार्य हो सकती है। दुनिया भर में देखी जाने वाली प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा में दृष्टिकोण की विविधता प्रत्येक देश के प्रमुख और खतरे वाले संसाधनों और चिंता के मुद्दों पर आधारित है। उदाहरण के लिए, मालदीव में, पर्यावरण शिक्षा और

जागरूकता कार्यक्रम 1989 की राष्ट्रीय पर्यावरण कार्य योजना (आईयूसीएन 1998) से उभरे समुद्री पर्यावरण के मुद्दों पर प्रकाश डालते हैं।

प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्यों में शामिल हैं, दैनिक जीवन में विज्ञान की प्रासंगिकता पर जोर देना। विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करना।

विज्ञान के सिद्धांतों और प्रथाओं के उपयोग पर अधिक निर्भरता के लिए अनुकूल वातावरण बनाना।

विद्यार्थियों को विभिन्न प्राकृतिक घटनाओं से परिचित कराना।

एक ऐसा दृष्टिकोण विकसित करना जो विज्ञान के विभिन्न विषयों में अपनाई जाने वाली पद्धति पर जोर देता हो।

सामान्यतः पर्यावरण के वास्तविक पहलुओं को जानना और समझना।

स्तनधारियों के बीच, मानव और उनके पर्यावरण के बीच और पर्यावरण के विभिन्न तत्वों और घटकों के बीच बातचीत को जानना और समझना।

हमारे आस-पास के समाज में निरंतर घटित होने वाले वर्ग के कारणों और प्रयासों के प्रति समझ, जागरूकता और संवेदनशीलता का निर्माण करना।

मानव और उसके आसपास की दुनिया से संबंधित सोचने, तर्क करने, पूछताछ करने, मूल्यांकन करने और निर्णय लेने में कौशल का निर्माण और विकास करना।

व्यक्तियों, समाज और पर्यावरण से संबंधित समस्याओं और मुद्दों को हल करने के लिए ज्ञान और कौशल का उपयोग करने में दो दृष्टिकोण विकसित करें।

विषम समाज के संदर्भ में सद्भाव से रहने की आवश्यकता और आवश्यकता के प्रति मूल्यों और दृष्टिकोण का निर्माण करना।

प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर पर्यावरण शिक्षा पर जोर दिया गया।

• जनसंख्या - अनियोजित जनसंख्या की वृद्धि, उत्पत्ति एवं समस्याएँ।

• कानून - भूमि उपयोग, भूमि पुनर्ग्रहण और भूमि एवं मृदा संरक्षण।

• संसाधन - संसाधन उपयोग, संरक्षण, पुनर्चक्रण।

• भोजन और पोषण - खाद्य उत्पादन, खाद्य मिलावट और संरक्षण, संतुलन आहार आदि।

• संरक्षण - वन्य जीवन, पौधे, मिट्टी, पानी और अन्य गैर-नवीकरणीय प्राकृतिक सुंदरता के संरक्षण के कारण

• प्रदूषण - जल, वायु और मिट्टी का प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण, कीटनाशक और अन्य रसायनों और अपशिष्ट निपटान द्वारा प्रदूषण

• स्वास्थ्य और स्वच्छता - व्यक्तिगत, पारिवारिक काउंटी और सामाजिक स्वास्थ्य और स्वच्छता, स्वास्थ्य खतरे आदि

• मनुष्य और प्रकृति - वायुमंडल के अन्य यौगिक, पर्यावरणीय गुणवत्ता और पृथ्वी पर भविष्य।

## तृतीयक स्तर

तृतीयक स्तर की शिक्षा ने 1990 के दशक में पर्यावरण प्रबंधकों और विशेषज्ञों की बढ़ती मांग का जवाब दिया है। महाविद्यालय स्तर पर सतत विकास एवं संरक्षण से संबंधित ज्ञान पर सर्वाधिक जोर दिया जाना चाहिए। सामग्री विज्ञान और प्रौद्योगिकी पर आधारित कॉलेज होनी चाहिए। प्रैक्टिकल और एक्शन ओरिएंटेड फील्ड वर्क सिखाना है। स्नातकोत्तर स्तर पर, चार प्रमुख क्षेत्र पर्यावरण इंजीनियरिंग, संरक्षण और प्रबंधन, पर्यावरणीय स्वास्थ्य, सामाजिक पारिस्थितिकी हैं। तृतीयक स्तर पर पर्यावरण शिक्षा के संबंध में पूरे क्षेत्र में प्रमुख रुझान देखे गए हैं, इनमें शामिल हैं:

सभी छात्रों के लिए, चाहे उनका पाठ्यक्रम कुछ भी हो, स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर पर मौजूदा पाठ्यक्रमों में बुनियादी पर्यावरणीय अवधारणाओं और तत्वों को जोड़ा गया;

बड़ी संख्या में पाठ्यक्रमों में शामिल नई पर्यावरण इकाइयाँ या मॉड्यूल पर्यावरण अध्ययन की गहराई और विस्तार को बढ़ा सकते हैं;

सेवाकालीन प्रशिक्षण और पर्यावरणीय मुद्दों और प्रथाओं पर ज्ञान और समझ के उन्नयन की मांग को पूरा करने के लिए तृतीयक शिक्षा संस्थानों द्वारा शुरू किए गए नए गैर-डिग्री कार्यक्रम और पाठ्यक्रम (फाउंडेशन, प्रमाणपत्र या डिप्लोमा स्तर पर);

प्रशिक्षकों को प्रशिक्षित करने और तृतीयक शिक्षा प्रणाली और अनुसंधान क्षमताओं को मजबूत करने पर अधिक जोर दिया गया;

पर्यावरण शिक्षा नीतियों और प्रथाओं पर अधिक शोध;

सरकारी, निजी और एनजीओ क्षेत्रों आदि में पर्यावरणीय कौशल और प्रतिभा के उपयोगकर्ताओं और तृतीयक शिक्षा संस्थानों के बीच एक बड़ा संवाद और सूचना का आदान-प्रदान, सुनिश्चित करना, शिक्षा और प्रशिक्षण प्रचलित व्यावहारिक जरूरतों को संबोधित करता है; और

समग्र पर्यावरण साक्षरता स्तर को बढ़ाने के लिए औपचारिक और गैर-औपचारिक दोनों तरीकों का उपयोग करते हुए, वयस्क और सामुदायिक शिक्षा पर जोर दिया गया।

## बी. अनौपचारिक शिक्षा

गैर-औपचारिक पर्यावरणीय शैक्षिक गतिविधियाँ औपचारिक शैक्षिक प्रणालियों के साथ-साथ, पाठ्यचर्या और पाठ्येतर स्तरों पर, व्यावसायिक प्रशिक्षण में, और गैर-औपचारिक चैनलों जैसे मास मीडिया और स्वैच्छिक संगठनों के माध्यम से व्यापक जन जागरूकता गतिविधियों के माध्यम से मौजूद हैं। विभिन्न समुदाय, संस्थाएँ और

व्यक्ति ऐसे तरीकों और प्रथाओं का चयन करते हैं जो उनकी स्थानीय आवश्यकताओं और क्षमताओं के लिए सबसे उपयुक्त हों। इस शिक्षा के प्रमुख घटक निम्नलिखित हैं।

• वयस्क शिक्षा: वयस्क पोस्टर, स्लाइड, ऑडियो-विज़ुअल और सूचना चित्र बनाकर बहुमूल्य वातावरण की रक्षा के लिए समाज को प्रभावित कर सकते हैं।

• आदिवासी और वनवासी: वे वन संपदा की रक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण माध्यम हैं।

• बच्चों की गतिविधियाँ: राष्ट्रीय प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय (NMNH) बच्चों के लिए पर्यावरण के बारे में स्पॉट पेंटिंग, मॉडलिंग और पोस्टर डिज़ाइन का संचालन करता है।

• पर्यावरण-विकास शिविर: वर्तमान में पर्यावरण विभाग द्वारा युवाओं में जागरूकता पैदा करने और उन्हें सतत विकास के अभ्यास से परिचित कराने के लिए एक गाइड लाइन का एक सेट तैयार किया गया है।

• गैर-सरकारी संगठन: पर्यावरण संरक्षण में 200 से अधिक गैर सरकारी संगठन लगे हुए हैं।

• प्रशिक्षण कार्यकारी: प्रशासकों के बीच पर्यावरण गतिविधियों के लिए नियमित पाठ्यक्रमों की व्यवस्था की जानी चाहिए।

• अनुसंधान और विकास कार्यक्रम: ऐसे अनुसंधान और विकास प्रयासों को जीवमंडल और मानव में पर्यावरण विभाग द्वारा समर्थित किया जाता है।

• फाउंडेशन पाठ्यक्रम: आईएएस, आईएफएस, आईपीएस और सशस्त्र बलों के तीन विंगों के कैडेटों के लिए चुने गए परिवीक्षार्थियों के लिए पाठ्यक्रमों को उनकी विशेषज्ञता के क्षेत्र से संबंधित पर्यावरण पर फाउंडेशन पाठ्यक्रमों के साथ पूरक करने की आवश्यकता है।

• शैक्षिक सामग्री और शिक्षण सहायक सामग्री का विकास: मीडिया (टीवी, रेडियो, फिल्म, समाचार पत्र आदि), ऑडियो, मोबाइल प्रदर्शनियों, दृश्य-श्रव्य सामग्री के लिए सामग्री सक्षम जनशक्ति द्वारा संचालित की जानी चाहिए।

• विश्व पर्यावरण दिवस: सभी सरकारें। राज्यों, केंद्रशासित प्रदेशों, विश्वविद्यालयों, स्कूलों, कॉलेजों, शैक्षणिक संस्थानों और स्वैच्छिक संगठनों में प्रत्येक वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस यानी 5 जून को उपयुक्त गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं। डीओई वित्तीय रूप से कार्य का समर्थन करता है।

## पर्यावरण शिक्षा के लिए लक्षित जनसंख्या

पर्यावरण शिक्षा और जागरूकता के लिए दर्शकों की जिन तीन श्रेणियों की पहचान की गई है वे इस प्रकार हैं:

**(ए) आम जनता:** आम जनता के लिए, प्रत्येक आयु वर्ग और विद्यार्थियों और शिक्षकों के लिए औपचारिक शिक्षा के सभी स्तरों पर पर्यावरण शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए और विकलांगों सहित युवाओं और वयस्कों के लिए अनौपचारिक शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए। पर्यावरण शिक्षा कार्यक्रम की आवश्यकता है जो आम जनता के बीच अपने पर्यावरण और उसके सामने आने वाले खतरों के प्रति जागरूकता पैदा करे। सामान्य सार्वजनिक शिक्षा में प्रतिभागियों में आम जनता विशेषकर गैर-सरकारी संगठन शामिल होने चाहिए।

**(बी) विशिष्ट व्यावसायिक या सामाजिक समूह:** ये वे हैं जिनकी गतिविधियों और प्रभाव का पर्यावरण पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। इनमें इंजीनियर, वास्तुकार, प्रशासक और योजनाकार, उद्योगपति, ट्रेड यूनियनवादी, नीति निर्माता और कृषक शामिल हैं।

**(सी) कुछ पेशेवर और वैज्ञानिक:** इस समूह में पर्यावरण की विशिष्ट समस्याओं पर काम करने वाले लोग शामिल हैं जैसे जीवविज्ञानी, पारिस्थितिकीविज्ञानी, जलविज्ञानी, टैक्सोनोमिस्ट, सैनिटरी इंजीनियर आदि।

## पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता एवं महत्व

पर्यावरण शिक्षा के औचित्य को निम्नलिखित रूप में वर्णित किया जा सकता है:

1. उन परिवर्तनों के बारे में ज्ञान जिन्होंने पर्यावरण को बदल दिया है - भूमि, जल, मौसम, वनस्पति, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक वातावरण पर्यावरण शिक्षा के आवश्यक घटक हैं। नतीजतन, पर्यावरण की समस्याओं को हल करने में सक्षम होने के लिए आम जनता को इन सभी से सुसज्जित होना चाहिए।

2. भूमि, जल, जंगल और अन्य खनिज संसाधनों का उपयोग ग्रामीण अर्थव्यवस्था की प्रमुख विशेषता है, जिसमें कृषि प्रेरक शक्ति है। इन संसाधनों के अनियंत्रित और अनुचित दोहन का पर्यावरण पर प्रभाव पड़ता है, जिससे जीवन स्तर में व्यवधान, भुखमरी, विस्थापन और मानव पीड़ा होती है। इसलिए पर्यावरण शिक्षा इन समस्याओं के कारणों और प्रभावों के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए आवश्यक है, जैसे: भोजन और पानी की कमी, प्रदूषण, महामारी का प्रकोप और प्राकृतिक आपदा जैसे बाढ़, कटाव और रेगिस्तान अतिक्रमण और निश्चित रूप से उन्हें कैसे रोका जाए।

3. अंतर्राष्ट्रीय सहयोग और समझ को बढ़ावा देने के लिए पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता है।

4. स्थानीय पर्यावरण पर सरकारी नीतियों के प्रभाव पर सार्वजनिक जागरूकता सरकार और स्थानीय लोगों दोनों के लिए उपयोगी होनी चाहिए।

5. ऐसे वैश्विक पर्यावरणीय मुद्दों के बारे में जागरूकता पर्यावरण शिक्षा का एक अनिवार्य घटक है जिसके बारे में आम नागरिक को जागरूक होना चाहिए।

6. महिलाओं और बच्चों की समग्र सामाजिक और आर्थिक मुक्ति के लिए पर्यावरण शिक्षा। ये विशेषकर ग्रामीण परिवेश में प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग में पर्याप्त प्रतिशत बनाते हैं।

7. इसकी कमी के लिए पर्यावरण शिक्षा अत्यंत आवश्यक है। दुनिया के इस हिस्से में पर्यावरण शिक्षा वस्तुतः एक नई चीज़ है।

8. पृथ्वी पर हमारे अस्तित्व के लिए पर्यावरण शिक्षा भी बहुत आवश्यक है। प्राकृतिक संसाधनों और सांस्कृतिक विरासत को न केवल इस पीढ़ी के लिए बल्कि भावी पीढ़ी के लिए भी संरक्षित करने की आवश्यकता है।

9. शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और पारिस्थितिक परस्पर निर्भरता के बारे में स्पष्ट जागरूकता और चिंता को बढ़ावा देना।

10. पर्यावरण के प्रति व्यक्तियों, समूहों और समग्र रूप से समाज के व्यवहार के नए पैटर्न बनाना।

11. प्रत्येक व्यक्ति को पर्यावरण की रक्षा और सुधार के लिए आवश्यक ज्ञान, मूल्य, दृष्टिकोण, प्रतिबद्धता और कौशल प्राप्त करने के अवसर प्रदान करना।

## पर्यावरण  शक्षा के शीर्ष 10 लाभ

पर्यावरण  शक्षा  दोनों नि र्मत और प्राकृतिक हमें (ईई)वातावरणों के बारे में सखाते हुए, हमारे आसपास की दुनिया से जोड़ती है। ईई पर्यावरण को प्रभा वत

करने वाले मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाता है जिस पर हम सभी निर्भर हैं, साथ ही इसे सुधारने और बनाए रखने के  लए हम क्या कदम उठा सकते हैं।

चाहे हम प्रकृति को कक्षा में लाएँ, छात्रों को सीखने के  लए बाहर ले जाएँ, या अपने परिवारों के साथ प्रकृति की सैर पर तात्का लक  शक्षण योग्य क्षण ढूँढ़ें, ईई के युवाओं,  शक्षकों, स्कूलों और समुदायों के  लए कई लाभ हैं।

पर्यावरण  शक्षा के लंबे समय से समर्थक और  वस्कॉन्सिन  वश्व वद्यालय  - में रूप के प्रोफेसर सहायक के ईई में पॉइंट स्टीवंस, इस क्षेत्र में भ वष्य के  शक्षकों को प्रेरित करना मेरा जुनून है। इन वर्षों में, मैंने अपनी प्रत्येक कक्षा से यह साझा करने के  लए कहा है  क वे ईई क्यों पढ़ाते हैं, उनके  लए इसका क्या अर्थ है, और यह सभी उम्र के  शक्षा र्थयों को कैसे लाभान्वित कर सकता है। यहां ईई के हमारे शीर्ष दस लाभ हैं।

## पर्यावरण  शक्षा के शीर्ष 10 लाभ

1. कल्पना और उत्साह बढ़ जाता है

ईई व्यवहारिक, इंटरैक्टिव  शक्षा है जो कल्पना को जागृत करती है और रचनात्मकता को खोलती है। जब ईई को पाठ्यक्रम में एकीकृत  कया जाता है, तो छात्र अ धक उत्साही होते हैं और सीखने में लगे रहते हैं, जिससे मुख्य शैक्ष णक क्षेत्रों में छात्रों की उपलब्धि बढ़ जाती है।

2. सीखना कक्षा से परे जाता है

ईई न केवल कक्षा के बाहर अनुभवात्मक सीखने के अवसर प्रदान करता है, बल्कि यह छात्रों को संबंध बनाने और वास्त वक दुनिया में अपनी  शक्षा को लागू करने में सक्षम बनाता है। ईई  शक्षा र्थयों को सामाजिक, पारिस्थितिक, आ र्थक, सांस्कृतिक और राजनीतिक मुद्दों के अंतर्संबंध को देखने में मदद करता है।

3. आलोचनात्मक और रचनात्मक सोच कौशल को बढ़ाया जाता है

ईई छात्रों को शोध करने, जांच करने, चीजें कैसे और क्यों होती हैं, और जटिल पर्यावरणीय मुद्दों के बारे में अपने निर्णय लेने के  लए प्रोत्साहित करती है। महत्वपूर्ण और रचनात्मक सोच कौशल को  वक सत और बढ़ाकर, ईई सू चत

उपभोक्ताओं, श्र मकों, साथ ही नीति या निर्णय निर्माताओं की एक नई पीढ़ी को बढ़ावा देने में मदद करता है।

4. सहनशीलता और समझ का समर्थन कया जाता है

ईई छात्रों को पूरी तस्वीर समझने के लए मुद्दों के व भन्न पक्षों की जांच करने के लए प्रोत्साहित करता है। यह व भन्न दृष्टिकोणों और व भन्न संस्कृतियों के प्रति सहिष्णुता को बढ़ावा देता है।

5. कई वषयों के लए राज्य और राष्ट्रीय शक्षण मानकों को पूरा कया जाता है

ईई प्रथाओं को पाठ्यक्रम में शा मल करके, शक्षक वज्ञान, ग णत, भाषा कला, इतिहास और बहुत कुछ को एक समृद्ध पाठ या गति व ध में एकीकृत कर सकते हैं, और फर भी सभी वषय क्षेत्रों में कई राज्य और राष्ट्रीय शैक्ष णक मानकों को पूरा कर सकते हैं। बाहर कक्षा लेना या प्रकृति को घर के अंदर लाना अंतः वषय सीखने के लए एक उत्कृष्ट पृष्ठभू म या संदर्भ प्रदान करता है।

6. बायोफोबिया और नेचर डे फ सट डसऑर्डर में गरावट आई है

छात्रों को प्रकृति से परि चत कराकर और उन्हें बाहर सीखने और खेलने की अनुमति देकर, ईई पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता, प्रशंसा और सम्मान को बढ़ावा देता है। यह  यह और ...है करता मुकाबला का " वकार के घाटे प्रकृति" !है मजेदार

**7.** स्वस्थ जीवन शैली को प्रोत्साहित  कया जाता है

ईई छात्रों को बाहर और स क्रय बनाता है, और कुछ स्वास्थ्य समस्याओं का समाधान करने में मदद करता है जो हम आज बच्चों में देख रहे हैं, जैसे मोटापा, ध्यान की कमी संबंधी  वकार और अवसाद। ईई के माध्यम से अक्सर अच्छे पोषण पर जोर दिया जाता है और प्रकृति में अ धक समय बिताने से तनाव कम होता है।

**8.** समुदाय मजबूत होते हैं

ईई सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से स्थान और संबंध की भावना को बढ़ावा देता है। जब छात्र अ धक जानने या अपने पर्यावरण को बेहतर बनाने के  लए कार्रवाई करने का निर्णय लेते हैं, तो वे अपने पड़ोस को प्रभा वत करने वाले पर्यावरणीय मुद्दों को समझने और उनका समाधान करने के  लए समुदाय को

एक साथ लाने में मदद करने के  लए सामुदायिक  वशेषज्ञों, दानदाताओं, स्वयंसेवकों और स्थानीय सु वधाओं तक पहुंचते हैं।

**9.** पर्यावरण को बेहतर बनाने के  लए जिम्मेदार कार्रवाई की जाती है

ईई छात्रों को यह समझने में मदद करता है  क उनके निर्णय और कार्य पर्यावरण को कैसे प्रभा वत करते हैं, जटिल पर्यावरणीय मुद्दों के समाधान के  लए आवश्यक ज्ञान और कौशल का निर्माण करता है, साथ ही हम भ वष्य के  लए अपने पर्यावरण को स्वस्थ और टिकाऊ बनाए रखने के  लए कैसे कार्रवाई कर सकते हैं। पीएलटी और अन्य ईई संगठनों द्वारा पेश  कए जाने वाले सेवा-अनुदान  लए के परियोजनाओं कार्य को  शक्षकों और छात्रों कार्यक्रम  शक्षण हैं। करते प्रदान सहायता से माध्यम के संसाधनों अन्य और

**10.** छात्र और  शक्षक सशक्त हैं

ईई स क्रय  शक्षा, नागरिकता और छात्र नेतृत्व को बढ़ावा देता है। यह युवाओं को अपनी आवाज साझा करने और अपने स्कूल और अपने समुदायों में बदलाव लाने का अ धकार देता है। ईई  शक्षकों को अपना पर्यावरण ज्ञान और  शक्षण कौशल बनाने में मदद करता है। मुझे आशा है  क ये  आपको लाभ "दस शीर्ष"

ईई को अपने पाठ्यक्रम में शा मल करने के  लए आत्म वश्वास और प्रतिबद्धता देंगे !

## पर्यावरण शिक्षा को लागू करने में बाधाएँ

वश्व पर्यावरण दिवस अत्य धक महत्व रखता है क्यों क यह जागरूकता बढ़ाने और पर्यावरणीय मुद्दों पर कार्रवाई करने के  लए एक वैश्विक मंच के रूप में कार्य करता है। प्रतिवर्ष 5 जून को मनाया जाने वाला यह दिन पर्यावरण संरक्षण और टिकाऊ प्रथाओं को बढ़ावा देने के  लए व्यक्तियों, समुदायों, संगठनों और सरकारों को एक साथ लाता है। यह जलवायु परिवर्तन, वनों की कटाई, प्रदूषण और जैव  व वधता के नुकसान जैसी पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने की तात्का लकता पर प्रकाश डालता है।  वश्व पर्यावरण दिवस एक अनुस्मारक के रूप में कार्य करता है  क हमारे ग्रह की भलाई हमारी अपनी और भावी पीढ़ियों की भलाई से जटिल रूप से जुड़ी हुई है। यह व्यक्तियों और समाजों को अपने पर्यावरणीय प्रभाव पर  वचार करने और एक टिकाऊ और लचीली दुनिया बनाने की दिशा में ठोस कदम उठाने के  लए प्रोत्साहित करता है। जिम्मेदारी की

भावना को बढ़ावा देने और सामूहिक कार्रवाई को प्रेरित करके, वश्व पर्यावरण दिवस वैश्विक स्तर पर पर्यावरण जागरूकता, शक्षा और वकालत को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भू मका निभाता है। "प्लास्टिक प्रदूषण के समाधान" वषय के तहत इस वर्ष के उत्सव ने मुझे इस बात पर वचार करने के लए प्रेरित कया क हम एक ऐसे समुदाय को कैसे वक सत और वक सत कर सकते हैं जो अपने पर्यावरण का सम्मान करता है और इसकी देखभाल करता है।

ए लमू केयर , *(एक समुदाय आधारित संगठन जिसे मैंने स्था पत कया है(* कक्षाओं में जलवायु कार्रवाई ज्ञान लाने के लए नेतृत्व कर रहा है। फर भी, उपरोक्त कार्रवाई को करने में हमें कई बाधाओं का सामना करना पड़ता है। इसे स्वीकार करते हुए मुझे केन्याई स्कूलों में पर्यावरण शक्षा पर ऑनलाइन शोध करने की प्रेरणा मली। बहुत कुछ करने की जरूरत है में स्कूलों के केन्या . शक्ष पर्यावरणा के कार्यान्वयन में कई बाधाएँ हैं। ये बाधाएँ अपनी प्रकृति और प्रभाव में भन्न होती हैं, ले कन वे सामूहिक रूप से स्कूली पाठ्यक्रम में पर्यावरण शक्षा के प्रभावी एकीकरण के लए चुनौतियाँ पेश करती हैं। कुछ सामान्य बाधाओं में शा मल हैं:

जागरूकता और समझ की कमी: केन्या में कई स्कूलों और शैक्ष णक संस्थानों में पर्यावरण  शक्षा के महत्व के बारे में जागरूकता या समझ सी मत है। जागरूकता की यह कमी स्कूल कार्यक्रमों में पर्यावरण  शक्षा को प्राथ मकता देने और शा मल करने में बाधा डालती है।

अपर्याप्त प्र शक्षण और क्षमतानिर्म-ाण: पर्यावरण  शक्षा को प्रभावी ढंग से  वतरित करने के  लए  शक्षकों को अक्सर  व शष्ट प्र शक्षण और व्यावसायिक  वकास के अवसरों की आवश्यकता होती है।  शक्षकों के  लए अपर्याप्त प्र शक्षण और क्षमता निर्माण पहल ने स्कूलों में पर्यावरण  शक्षा के सफल कार्यान्वयन में बाधा उत्पन्न की है।

सी मत संसाधन और साम ग्रयाँ: प्रभावी पर्यावरण  शक्षा के  लए उपयुक्त संसाधनों और साम ग्रयों, जैसे पाठ्यपुस्तकें,  शक्षण सहायक सामग्री और प्रयोगशाला उपकरण की उपलब्धता महत्वपूर्ण है। हालाँ क, केन्या के कई स्कूलों को इन संसाधनों तक पहुँचने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जो व्यावहारिक और व्यावहारिक गति व धयों के कार्यान्वयन में बाधा उत्पन्न करता है।

प्रतिस्पर्धात्मक प्राथ मकताएँ और पाठ्यक्रम संबंधी बाधाएँ: केन्या में स्कूलों को अक्सर शैक्ष णक प्रदर्शन लक्ष्यों को पूरा करने और सी मत समय सीमा के भीतर आवश्यक पाठ्यक्रम सामग्री को पूरा करने के दबाव का सामना करना पड़ता है। इस दबाव के कारण पर्यावरण  शक्षा की उपेक्षा हुई है या इसे पाठ्यक्रम के अ भन्न अंग के बजाय एक अतिरिक्त बोझ के रूप में एकीकृत  कया गया है।

बुनियादी ढाँचा और साजोब संबंधी सामान-ाधाएँ: कुछ स्कूलों में पर्यावरण  शक्षा गति व धयों का समर्थन करने के  लए आवश्यक बुनियादी ढाँचे और सु वधाओं का अभाव है, जैसे अपर्याप्त कक्षाएँ, प्रयोगशालाएँ, या व्यावहारिक  शक्षा के  लए बाहरी स्थान। अपर्याप्त बुनियादी ढांचे ने क्षेत्र यात्राओं, प्रयोगों और अन्य अनुभवात्मक  शक्षण गति व धयों के कार्यान्वयन में बाधा उत्पन्न की है।

सामाजिक आ थक कारक: आ थक बाधाओं और गरीबी ने स्कूलों के  लए उपलब्ध संसाधनों को सी मत कर दिया है, जिससे पर्यावरण  शक्षा पहल में निवेश करना चुनौतीपूर्ण हो गया है। इसके अतिरिक्त, वं चत पृष्ठभू म के छात्रों

की प्रतिस्पर्धी प्राथ मकताएँ होती हैं, जैसे बुनियादी ज़रूरतें और आजी वका संबंधी चंताएँ, जो पर्यावरण शक्षा के साथ उनके जुड़ाव में बाधा बनती हैं।

नीति और समन्वय अंतराल: राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण शक्षा के लए एक व्यापक और समन्वित नीति ढांचे की कमी इसके प्रभावी कार्यान्वयन में बाधा डालती है। स्पष्ट दिशानिर्देशों, मानकों और संबं धत अ धकारियों के समर्थन के बिना, स्कूल पर्यावरण शक्षा को अपने पाठ्यक्रम और गति व धयों में एकीकृत करने के लए संघर्ष करते हैं।

1. कठोर विशेषज्ञता.
2. पर्यावरण शिक्षा के अंतर-विषयक मूल्य की जटिलता।
3. छात्र भागीदारी कार्यक्रमों के आयोजन के लिए उच्च छात्र-शिक्षक अनुपात।
4. योग्य प्रशिक्षित पर्यावरण शिक्षक की कमी।
5. उपकरण, पूरक सामग्री और संदर्भ सामग्री के संदर्भ में उचित संसाधनों का अभाव।
6. परिवर्तनों का विरोध करने की प्रवृत्ति

## निष्कर्ष

पर्यावरण शिक्षा एक गतिशील प्रक्रिया है। ऐसी शिक्षा की प्राथमिकता लोगों में अपने समग्र परिवेश के प्रति सतर्क दिमाग विकसित करना है। इसका मुख्य कार्य हमारे पर्यावरण की विभिन्न समस्याओं को व्यवस्थित ढंग से हल करने के लिए उचित ज्ञान और प्रशिक्षण प्रदान करना है। लोगों को अच्छे स्वास्थ्य और उच्च गुणवत्ता वाले जीवन का आनंद लेने में सक्षम बनाने के लिए, वायु, जल और मिट्टी के प्रदूषण, शोर, कंपन, हानिकारक गंध आदि के कारण मानव स्वास्थ्य पर हानिकारक प्रभाव या पर्यावरण को होने वाली क्षति को रोकना महत्वपूर्ण है। शिक्षा एक पद्धति है जिसमें लोग अपने परिवेश से परिचित होते हैं और सीखने, क्षमताओं, मूल्यों, अनुभवों और जुनून को सुरक्षित करते हैं, जो सभी उन्हें अलग-अलग और समग्र रूप से कार्य करने और वर्तमान और भविष्य के पर्यावरणीय मुद्दों की देखभाल करने के लिए सशक्त बनाएंगे। यह प्राकृतिक और मानवीय प्रणालियों के बीच संबंधों और अंतःक्रियाओं का अध्ययन है। पर्यावरण शिक्षा को एक व्यापक आजीवन शिक्षा का गठन करना चाहिए, जो तेजी से बदलती दुनिया में परिवर्तनों के प्रति उत्तरदायी हो। इसे समसामयिक दुनिया की प्रमुख समस्याओं की समझ के माध्यम से व्यक्ति को जीवन के लिए तैयार करना चाहिए, और नैतिक मूल्यों को ध्यान में रखते हुए

जीवन को बेहतर बनाने और पर्यावरण की रक्षा करने की दिशा में उत्पादक भूमिका निभाने के लिए आवश्यक कौशल और विशेषताओं का प्रावधान करना चाहिए।